Reg. E /1260 / 2-7-2010 4 ISSN : 2278 - 4594

The Referred International Journal

Recent Thought

Vaicharik Pravaho

Year - 4 ISSUE - 2 OCT - 2015

શિક્ષણ : રંગ-તરંગ

SPECIAL ISSUE

One-Day National Seminar

on

"Prospects and Challenges of Contemporary Education"

organized by

Shree Somnath Education Society's

Smt. C. P. Choksi Arts & Shree P. L. Choksi Commerce College, Veraval

on date : 15-03-2015

સંપાદક : ડૉ. રશ્મિ મહેતા

સહસંપાદક : : ડૉ. એ. એમ. ચોચા

Reg. No: E / 1260 / 2-7-2010 ISSN: 2278-4594

Recent Thought-*Vaicharik Pravaho*

The Refereed International Journal

Year: 4 ISSUE : 2 Oct – 2015

SPECIAL ISSUE

One-Day National Seminar on
"Prospects and Challenges of Contemporary Education"
organized by
Shree Somnath Education Society's
Smt. C.P. Choksi Arts &
Shree P.L. Choksi Commerce College,
Veraval
on
15-03-2015

સંપાદક : ડૉ. રશ્મિ મહેતા
સહસંપાદક : : ડૉ. એ. એમ. ચોચા

❖ Publisher ❖
PRINCIPAL
Smt. C. P. Choksi Arts and
Shree P. L. Choksi Commerce College. Veraval.

Visit at www.recentthought.com

Sr. No.	Title	Page No.
(56)	CHANGING STRUCTURES OF THE HIGHER EDUCATION SYSTEMS : Dr. V.S.ZALA, Mahila Arts and Commerce College Veraval, Gir Samnath	111
(57)	संस्कृत शिक्षा का वैश्वीकरण : प्रो.अर्चना दुबे, श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, वेरावल	114
(58)	मूल्य आधारित शिक्षण : Prof. Bhavnaben L. Trivadi & Dr. Rekhaben M. Gunjariya, M M GHODASARA ARTS AND COMMERCE COLLEGE, JUNAGADH.	116
(59)	पर्यावरण और शिक्षा, Barad Kesurbhai N., Mahila Arts & Commerce College-Veraval	118
(60)	शिक्षण में पर्यावरण का महत्व : भट्ट दिव्या शैलेषकुमार	120
(61)	वर्तमान शिक्षण के प्रवाहो और पडकार : भुत संगीता राजेशभाई	122
(62)	वैदिक शास्त्रों में शिक्षा का स्वरूप : बी. उमा महेश्वरी, आसी. प्रो. न्यायदर्शन, श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय	124
(63)	प्राचीन शिक्षा प्रणाली की आधुनिक शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में उपयुक्तता : प्रा. चंद्रिका भगोरा, मददनीश प्राध्यापक, श्री एच. एन. शुक्ला कॉलेज ऑफ टीचर एज्युकेशन, राजकोट	126
(64)	संस्कृतसाहित्य में शिक्षण और संस्कृति : डॉ.डायालाल मालदेभाई मोकरिया श्रीसोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी वेरावल, गुजरात	129
(65)	विकासशील भारतीय समाज में शिक्षा : प्रा. डॉ. देवायत एम. सोलंक यु. के. वाछाणी महिला कॉलेज-केशोद	131
(66)	शिक्षण का महत्व : दुष्यन्त प्रेमकुमार व्यास, आचार्य, प्रथम वर्ष नुस्नातक MA-1, श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी	133
(67)	उच्च शिक्षा संस्थानों में मूल्य आधारित शिक्षा का महत्व : दक्षा मकवाणाल टी.एन.राव एम.एड. कालेज, राजकोट	136
(68)	"वर्तमान शिक्षा की धाराएँ और चुनोतिया"-"शिक्षक और संस्कृति" : जोशी धात्री हितेषभाई, डॉ. सुभाष महिला कॉलेज - जूनागढ़ एम.ए. (सेम-२)	139
(69)	पर्यावरण की शिक्षा : डा दवजानी ए, मातुश्री मोंघीबा महिला आर्ट्स कॉलेज अमरली	141
(70)	मूल्य आधारित शिक्षण : प्रा. डॉ. गीताबेन ए उनडकट, डॉ. वी. आर. गोढाणीया महिला कॉलेज, पोरबन्दर	143

वैदिक शास्त्रों में शिक्षा का स्वरूप

बी. उमा महेश्वरी
आसी. प्रो. न्यायदर्शन
श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय

शिक्षा शब्द संस्कृभाषा के शिक्ष धातु से 'अ' प्रत्यय कर 'टाप' प्रत्यय करने से शिक्षा शब्द उत्पन्न होता है । "शिक्ष्यते दिद्योपादियतोनयेति 'शिक्ष' अर्थात प्राणी जिस साधन प्रणाली से ज्ञान उपार्जन करता है उसी का नाम है शिक्षा ।

विद्या का प्रथम स्त्रोत वेद है । विद्या १४ प्रकार के है । जैसे –

पुराणन्यायमीमांसा धर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः ।
वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश ।।

इन १४ विद्याओं में दो प्रकार की विद्याओ का समावेश है, एक अपरा और दूसरी परा । संसार में अभ्युदय दिलानेवाली अपरा है और भव-बन्धन से मोक्ष दिलाकर परमात्मा सायुज्य करानेवाली परा है ।

'अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते'

विद्या देने वाला शिक्षक गुरु है । और विद्या को ग्रहण करने वाला विद्यार्थी, शिष्य है । गुरु की गरीमा–

शिक्षक, आचार्य, उपाध्याय और अध्यापक शब्दो की अपेक्षा लोकाव्यवहार में पढ ानेवाले व्यकित के लिए 'गुरु' का प्रकार अधिक प्रचलित रहा । गुरु शब्द की व्याख्या कई प्रकार से की जाती है । उदाहराणर्थ–

शिक्षक, आचार्य, उपाध्याय और अध्यापक शब्दो की अपेक्षा लोकव्यवहार में पढ ानेवाला व्यकित के लिए गुरु प्रयोग अधिक पचलित रहा । गुरु शब्द की व्याख्या कई प्रकार से की जाती है । उदाहरणार्थ–

'गरति सिऽति कर्ण्योर्ज्ञानामृतम् इति गुरुः' अर्थात् जो शिष्य के कानो में ज्ञानरुपी अमृत का सिंचन करता है वह गुरु है (गृ सेचने भ्वादीः) "गृणाति उपदिशति वेदादि धर्मशास्त्रान्" अर्थात् जो शिष्य के प्रति धर्म आदि ज्ञातव्य तथ्यों का उपदेश करता है वह गुरु है ।

गकारः सिद्धिदः प्रोक्तो रेफः पापस्य कारकः ।
उकारो विष्णुरव्यत्तस्त्रितयात्मा गुरुः परः ।।

सब प्रकार के शिक्षकों के लिए गुरु शब्द का प्रयोग सार्वभौमवत प्रतीत होता है । महर्षि याज्ञवल्कय ने कह है ।

'उपनीसद गुरुः शिष्यं महाव्यादतपूर्वकम् ।
वेदमध्यापयेदेनं शौचाचारांऽ शिक्षयेत् ।।'

अर्थात् उपनयन की विधि संपन्न हो जाने पर गुरु अपने शिष्य को भूः भूवःस्वः इन् व्यादतियों का उच्चरण् कराकर वेद पढाने और दन्तधावन एवं स्त्रानं आदी के द्वारा शैच के नियमों को शिखावे तथा उसके हितावह आचार की भी सिक्षा दे । आचार परमधर्म माना गया है । इस के संबन्ध में शास्त्रों में बहुत कुछ लिखा गया है ।

सदाचार के अन्तर्गत काम, क्रोध,लोभ, मोह,मद, मास्सर्य, ईर्ष्या, राग- देष, झूट, कपट, छल दम्ब आदी असत आचरणो का त्याग तथा सत्य, अहिंसा, दया, परोपकार, क्षमा, धृति, इन्द्रिययनिग्रह अक्रोध आदी सत आचरणो का ग्रहण मुख्य है ।

विष्णु धर्मोत्तरपुराण मुं कहा गया है कि सभी शुभ लक्षणों से युकत होनेपर भी पुरुष यदी आचार से रहित है तो उसे न विद्या की प्राप्ति होती है और न अभीष्ट मनोरथो की हो अेसा व्यक्ति नरक का भागी बनता है ।

सर्वलक्षणयुक्तदपि नरस्त्वाचारवर्जितः ।
न प्रान्पोति तथा विद्यां न च किितदभीप्सितम् ।
आचाररहीतो पुरुषो नरकं प्रीत्पद्यते ।

अत : शास्त्रो में शिक्षित सदाचारों का व्यवहार सदा करणा चाहिये ।

सन्दर्भगर्न्थसूचि

१. याज्ञवल्कयस्मृति १.२.३
२. मुण्डकोपनिषद् -१.५
३. शब्दकल्पद्रुम -पृ.सं.-३४०
४ कल्याण शिक्षा अङ्क, गीताप्रेस-गोरखपुर ।
५ मनुस्मृतिः, सम्पादकः- गङ्गानाथ झा, परिमल पब्लिकेशन, दिल्लि ।
६ याज्ञवल्कयस्मृतिः ।
७ शब्दकल्पद्रुमः ।
८ मुण्डकोपनिषद् ।
९ विष्णधर्मोत्तरपुराण -३,२५०,४